AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

स्वाधीनता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

ORIGINAL ARTICLE

Author
क्षमा चन्द्राकर
चंगोराभाटा, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

भारत आज आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है भारत को ब्रिटिश शासकों से आजाद हुए 78 वर्ष हो गए। यह आजादी हमें बहुत कठिनाइयों से मिली इस आजादी को पाने के लिए कितने लोगों ने अपनी जान गवां दी। भारत मां की रक्षा के लिए वीर सपूतों के साथ–साथ देश की वीरांगनाओं का भी अहम योगदान रहा। देश के लिए मर मिटने वालों में कई महिलाएं भी रहीं, जिन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय योगदान दिया। जब कभी हम देश के स्वतंत्रता सेनानियों का नाम लेते हैं तो उसमें देश की बेटियों का भी नाम आता है। एक तरफ शहीद भगत सिंह हैं, तो दूसरी तरफ झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, ऐसी अनेक वीरांगनाओं है जिन्होंने देश के खातिर अपने प्राण न्योछावर कर दिए, कुछ महिलाओं ने युद्ध के मैदान में मोर्चा संभाला तो कुछ ने अपने परिवार के पुरुषों का समर्थन किया तो वहीं कुछ महिलाओं ने अपने उत्प्रेरक भाषण व कलम की तलवार से देश में स्वतंत्रता का अलख जगाने का प्रयास किया, इन वीरांगनाओं ने देश की आजादी के खातिर जेल जाने में भी कोई संकोच नहीं किया।

मुख्य शब्द

स्वाधीनता संग्राम, सत्याग्रह, न्योछावर, इतिहास, अमानवीय व्यवहार, नेतृत्व.

परिचय

भारत में स्वाधीनता के प्राप्ति हेतु अनेक आंदोलन हुए अंग्रेजों की दासता से पहले भारत को ''सोने की चिड़िया'' कहा जाता था, परंतु ब्रिटिश शासकों के अत्याचार से देश की स्थिति खराब होने लगी अंग्रेजों ने अपने फायदे के लिए भारतीयों पर कई तरह के अत्याचार किए इन अत्याचारों के खिलाफ भारतीयों ने कई आंदोलन किए जिनमें खिलाफत आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, नमक सत्याग्रह आदि प्रमुख रहे इन आंदोलनों में अनेक महापुरुषों ने भाग लिया तो वहीं अनेक महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण कार्य किए यहां उनमें से कुछ प्रमुख महिलाओं का उल्लेख किया जा रहा है जिन्होंने किसी ना किसी प्रकार से स्वाधीनता संग्राम में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

रानी लक्ष्मीबाई

स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम की पर्याय माने जाने वाली झांसी की रानी लक्ष्मी बाई का जन्म काशी में 19 नवंबर 1835 को हुआ था, बचपन में इन्हें मनु नाम से पुकारा जाता था। बालिका मनु पेशवा के बाजीराव के दत्तक पुत्र नाना साहब के सैनिक प्रशिक्षण को एकाग्र होकर देखती आत्मसात करती जाती, मनु ने तलवार भांजना, बंदूक चलाना,

तीर चलाना, घुड़सवारी करना सीख लिया। मनु का विवाह 1848 में झांसी के राजा गंगाधर राव से हुआ झांसी आकर मनुबाई से वह लक्ष्मीबाई बन गई। राजमहल में काम करने वाली स्त्रियों को भी वह युद्ध कौशल सिखाती। रानी लक्ष्मीबाई ने पुत्र को जन्म दिया परंतु वह बच ना सका, इसके उपरांत पति के खराब स्वास्थ्य को देखते हुए उन्होंने दत्तक पुत्र दामोदर राव को अपनाया। राजा के निधन के बाद अंग्रेजी हुकूमत झांसी पर बुरी नजर डालने लगे, रानी जी झांसी को अंग्रेजों से बचाने में जुट गयीं। इधर पूरे भारत में भी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध तैयारियां चल रही थी, रानी लक्ष्मीबाई ने भी अपनी सेना तैयार कर रखी थी, झांसी पर अंग्रेजों ने आक्रमण कर दिया। रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों का डटकर सामना किया, झांसी का प्रत्येक सैनिक प्राण देने को प्रस्तुत था। रानी की सहेलियां भी युद्ध के मैदान में कूद पड़ी परंतु दो नमक हराम सैनिकों मीर बख्श और दूल्हा जी ने झांसी का द्वार अंग्रेजी सेना के लिए खोल दिया, युद्ध में अंग्रेजो का पलड़ा भारी होने लगा, रानी ने दत्तक पुत्र दामोदर राव को पीठ पर बांध दिया और युद्ध करते हुए ग्वालियर की ओर बढ़ने लगी परंतु वहां भी अंग्रेजों ने धावा बोल दिया रानी गंभीर रूप से घायल हो गई थी सभी सैनिक शहीद हो गए। रानी अपने अंतिम रक्त बूंद तक लड़ती रही वो नहीं चाहती थी कि अंग्रेज उनके शरीर या शव को स्पर्श भी कर सके इसलिए सैनिक को बोलकर बाबा गंगादास की कुटिया में चली गई, 17 जून 1858 को गंगा दास के द्वारा गंगा जल पीकर अपने प्राण त्याग दिए और इस तरह झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने एक वीरांगना के रूप में झांसी के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

''बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।''

कस्तूरबा गांधी

प्रसिद्ध कहावत पुरुष के निर्माण में स्त्री का बहुत बड़ा हाथ होता है को चरितार्थ करने का काम कस्तूरबा गांधी ने किया। महात्मा गांधी की जीवन संगिनी ने वास्तव में उनका जीवन भर साथ निभाया अपने पति की अद्भुत अनुगामिनी रही। कस्तूरबा गांधी का विवाह महात्मा गांधीजी के साथ 14 वर्ष में हो गया था 19 वर्ष की आयु में उनका पहला पुत्र हीरालाल हो गया, कस्तूरबा जी महात्मा गांधी से उम्र में 6 महीने बड़ी थी। महात्मा गांधी ने कस्तूरबा की निरक्षरता को दूर करना चाहा परंतु वे कर ना सके। महात्मा गांधी जब दक्षिण अफ्रीका गए तब कुछ समय बाद कस्तूरबा जी भी उनके साथ गई दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी ने अत्याचारों के खिलाफ ''सत्याग्रह'' का हथियार अपनाया, सत्याग्रह मतलब सत्य के प्रति दृढ़ता से रहना। दक्षिण अफ्रीका में इस हथियार से सत्ता को गांधी जी ने झुका दिया और इसी सत्याग्रह के लिए कस्तूरबा गांधी को 1913 में जेल यात्रा करनी पड़ी वे 3 महीने तक जेल में रहीं, जेल में रहे कैदियों को दिए जाने वाले भोजन की खराब गुणवत्ता का विरोध करते हुए 5 दिन तक उपवास किया जिससे उनका स्वास्थ्य भी बिगड़ गया।

सन् 1915 में गांधीजी स्वदेश लौटे यहां आकर उन्होंने भारत के नेताओं को सत्याग्रह के बारे में समझाया, जिसका कस्तूरबा गांधी ने भी प्रचार प्रसार किया। गांधीजी ने चंपारण में नील की खेती का विरोध किया यहां भी कस्तूरबा जी उनके साथ डटी रहीं कस्तूरबा जी सत्याग्रह पर व गांधी जी के आंदोलन का प्रचार–प्रसार करने के लिए जगह–जगह भाषण देती रही लोगों ने उनकी बातों को सुना और समझा तथा साथ भी दिया।

सन् 1922 में असहयोग आंदोलन में गांधीजी गिरफ्तार हुए तब गांधीजी की अनुपस्थिति में कस्तूरबा जी ने कई रचनात्मक कार्य किए। सन् 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में जहां पुरुष जेल गए वहीं गांधी जी के आदेशानुसार महिलाओं ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, शराब दुकानों पर धरना देना आदि कार्य किया। कस्तूरबा जी स्वयं बाजारों में जाकर शांतिपूर्वक धरना प्रदर्शन करती रहीं। 6 अप्रैल 1930 में नमक सत्याग्रह में 5000 महिलाएं जुटी, कस्तूरबा जी से प्रेरणा पाकर पहली बार इतनी अधिक संख्या में महिलाएं बाहर निकली और राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया इस तरह कस्तूरबा जी ने महिलाओं के अंदर देश प्रेम की ज्वाला भड़काई। सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के अंतर्गत गांधी जी के साथ पुना में आगा खां महल में कस्तूरबा जी को भी नजर बंद कर दिया गया था। कस्तूरबा जी पति सेवा को अपना धर्म मानती थी उन्होंने पति सेवा घर पर ही नहीं की बल्कि उनका साथ देने

जेल भी गई और इस तरह स्वाधीनता आंदोलन में महात्मा गांधी का पूरा साथ निभाया।

दुर्गा देवी (दुर्गा भाभी)

भारत की स्वाधीनता का प्रथम संग्राम दुर्भाग्यवश कुछ स्वार्थी रजवाड़ों द्वारा अंग्रेजों को दिए गए सहयोग और समर्थन के कारण हम हार गए, फिर भी स्वतंत्रता की उस ज्वाला को शांत नहीं होने दिया। काकोरी कांड से कुछ नव युवकों का चेहरा सामने आया जिसमें थे राम प्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खां आदि। चंद्रशेखर आजाद भारत नौजवान सभा और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी के संस्थापक व प्रणेता थे इनके नेतृत्व में ही भगत सिंह, यशपाल, सुखदेव, राजगुरु आदि क्रांतिकारियों की सक्रिय पार्टी बन गई, इन क्रांतिकारियों के साथ पढ़े–लिखे भगवती चरण वोहरा भी साथ काम करने लगे। देश के प्राय सभी शीर्ष क्रांतिकारियों का भगवती चरण के घर आना जाना लगा रहता था उनके घर पर क्रांतिकारी छुपा भी करते थे, इन सबका ध्यान रखती थी भगवती जी की पत्नी दुर्गा देवी अर्थात् दुर्गा भाभी। इनका जन्म इलाहाबाद में 1907 में हुआ जब कभी भगवतीचरण जी के घर में क्रांतिकारियों की अनौपचारिक बैठक होती जिस में क्रांति की रूपरेखा तैयार की जाती तो दुर्गा भाभी भी अपना सुझाव प्रस्तुत करती जो सटीक होने के कारण कार्यक्रम का अंश बना लिया जाता। उन दिनों साइमन आयोग के विरोध प्रदर्शन में लाला लाजपत राय घायल होकर स्वर्ग सिधार गए, उनकी हत्या के विद्रोह में भगत सिंह, राजगुरु और चंद्रशेखर आजाद ने पुलिस साजेंट सांडर्स को मार दिया, तब भगत सिंह को वेश बदलकर कलकात्ता जाने में दुर्गा भाभी ने हीं उनकी पत्नी की भूमिका निभाई ''देश के लिए सब करूंगी'' यह सोच थी दुर्गा भाभी की, वे कलकत्ता पहुंचने में सफल हुए। केंद्रीय विधानसभा में बम फेंकने के कारण सरदार भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त, राजगुरु को मृत्युदंड की सजा दी गई उन्हें जेल से छुड़ाने के लिए आजाद ने योजना बनाई जिसमें बमों का उपयोग किया जाना था। जांच के लिए बम लेकर भगवती बाबू जंगल में रावी नदी के किनारे गये जहां बम के फट जाने के कारण इनकी मृत्यु हो गई। इस घटना के बाद भी दुर्गा भाभी सारा दुख पी गई और पुनः तैयार हो गई और वीरों को जेल से छुड़ाने की योजना अपने हाथ में ले ली परंतु गांधी जी के अंग्रेजों से सिफारिश नहीं करने के कारण सजा में कोई परिवर्तन नहीं किया गया, जिसके कारण भगत सिंह ने योजना को सहयोग देने से मना कर दिया और देश के लिए फांसी पर चढ़ गए। इसके बाद भी दुर्गा भाभी ने कई योजनाओं में भाग लिया मुंबई के पुलिस आयुक्त को मारने की योजना बनाई बंदूक से गोली दागी मुकदमा चला परंतु साक्ष्य ना मिलने के कारण मुक्त कर दी गई। आजादी की लड़ाई में नरम दल के सक्रिय हो जाने के चलते दुर्गा भाभी ने भी पिस्तौल छोड़ समाजसेवा अपना लिया। अपने अंतिम दिनों तक वह देश के लिए सेवा देती रही।

सरोजिनी नायडू

भारत की स्वर कोकिला सरोजनी नायडू का जन्म हैदराबाद में हुआ था। बचपन से ही वे कुशाग्र बुद्धि की थी। पढ़ाई लिखाई के साथ वे काव्य की ओर अधिक उन्मुक्त थी। सरोजिनी जी ने सन् 1918 में स्त्री मताधिकार का पक्ष अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में रखा उनके भाषण को सुनकर सभी मंत्रमुग्ध हो गए। सन् 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकांड की कड़ी निंदा लंदन के किंग्सले सभागार में किया जिसकी चर्चा दूर दूर तक हुई। सन 1925 में श्रीमती सरोजिनी नायडू को कानपुर के कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष चुना गया। सन् 1928 में सरोजिनी जी ने अमेरिका यात्रा की और अमेरिकियों को गांधीवादी बनने पर जोर दिया। वे गांधी जी से बहुत प्रभावित थी गांधी जी के साथ उन्होंने भारत दर्शन किए। भारत की परिस्थितियों को देखकर वे द्रवित हो जाती और रोने लग जाती, उनके अंदर का कवि अनायास प्रेरित हो उठा और अपनी रचनाओं में हिंदुस्तान का बखान किया। सन् 1930 में नमक सत्याग्रह के समय सरोजिनी जी गांधी जी के साथ दांडी की पदयात्रा की और 23 मई को गिरफ्तार हो गई जेल में भी वह कलम चलाती और अन्य सामाजिक कार्य करती रहती। सन् 1931 में गोलमेज सम्मेलन में गांधी जी के साथ लंदन गई वहां से असफल लौटे तो जेल पहुंचा दिए गए, उनके साथ अन्य कांग्रेसी नेता भी गिरफ्तार हुए। सन् 1942 के भारत छोड़ो अभियान में भी गांधी जी का साथ सरोजिनी जी ने दिया गांधी जी के साथ पुना के आगा खां महल में इन्हें भी नजर बंद कर दिया गया। सन् 1943 में जब गांधी जी ने 21 दिनों का उपवास रखा और उनकी तबीयत बिगड़ने लगी तब सरोजिनी जी ने दिन–रात गांधी जी की सेवा की। श्रीमती सरोजिनी नायडू नारी शिक्षा,

पर्दा प्रथा ,बाल विवाह ,दहेज प्रथा, बहू उत्पीड़न, विधवा विवाह से संबंधित कार्यक्रमों से जुड़ी रही विदेशों में भी स्त्री सम्मान के लिए संघर्ष करती रही, उन्होंने अपने कलम से भारत के लोगों में स्वतंत्रता की क्रांति जगाई, ना केवल काव्य के माध्यम से स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया अपितु आजादी के लिए जेल भी गई। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरोजनी जी को उनके कर्तव्य परायणता को देखते हुए उत्तर प्रदेश की राज्यपाल बनाई गई।

सुभद्रा कुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी देशभक्ति से भरपूर कवि हृदय की स्वामिनी थी। सुभद्रा कुमारी का जन्म सन् 1905 में इलाहाबाद में हुआ था। महान कवयित्री महादेवी वर्मा उनकी स्कूल की दिनों से ही मित्र थी जो आजीवन उनकी मित्र रहीं। स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में जलियांवाला बाग हत्याकांड ने सभी भारतीयों को झकझोर कर रख दिया था, सुभद्रा जी का हृदय भी अत्यंत द्रवित हो उठा तब उन्होंने एक कविता लिखी थी ''जलियांवाला बाग का बसंत'' जो प्रसिद्ध हुआ। सुभद्रा जी अपनी देश प्रेम की रचनाओं से लोगों में देशभक्ति का रस घोलने लगी साथ ही साथ देश की नारियों को शिक्षा के प्रति जागरूक भी करने लगी। विवाह के पश्चात पति के प्रेरणा व गांधीजी के आव्हान पर सुभद्रा की आजादी की लड़ाई में कूद पड़ी आरंभ हुआ असहयोग आंदोलन से। सन् 1932 में सुभद्रा जी पहली बार गांधी जी से मिली उसके बाद वह गांधी जी की अनुयायी बनकर अनेक आंदोलनों में हिस्सा लेते गई। जबलपुर में राष्ट्रीय नेताओं के प्रवेश पर सरकार ने निषेधाज्ञा जारी कर दी, इसके विरोध में जुलूस निकाले गए जिसके नेतृत्वकर्ता में सुभद्रा जी भी थी जिसमें आंदोलन कर्ताओं की गिरफ्तारी हुई परंतु गांधी जी के कहने पर (गर्भावस्था के कारण) स्वयं को गिरफ्तार होने से बचा लिया। देश के लिए मर मिटने का संकल्प लिए वह देश की आजादी के लिए इस अवस्था में भी जेल जाने को तैयार थी। सुभद्रा जी की महान कृति ''झांसी की रानी'' का प्रभाव जनमानस पर पड़ा प्रत्येक भारतीय के जुबान पर यह कविता थी बच्चों को भी यह कंठस्थ हो गई, आज भी यह अविस्मरणीय है सुभाष चंद्र बोस जी ने इस कविता से प्रभावित होकर महिलाओं के एक रेजीमेंट का नाम ''रानी झांसी रेजिमेंट'' रख दिया। सन् 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया जेल भी गयी परंतु ट्यूमर हो जाने के कारण जेल में उनको अनेक स्वास्थ्य समस्याएं होने लगी जिसके चलते गांधी जी के कहने पर उन्हें छोड़ दिया गया इसका अफसोस उन्हें रहा कि उन्हें पूरा दण्ड नहीं दिया गया। सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में फिर से जेल गई और मुक्त भी हुई ट्यूमर हो जाने के बाद भी वे स्वाधीनता की लड़ाई में आगे रहीं। सुभद्रा जी के काव्यों व दृढ़ प्रतिज्ञा ने अंग्रेजी सरकार को हिला कर रख दिया।

राजकुमारी अमृत कौर

2 फरवरी 1889 में लखनऊ में जन्मी राजकुमारी अमृत कौर ने स्वाधीनता संग्राम में बहुमूल्य योगदान दिया, अमृत जी की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गई हुई थी वहां से लौटने के बाद उनके पिता ने गोपाल कृष्ण गोखले से मिलवाया, गोखले जी ने महात्मा गांधी से उनका परिचय कराया गांधीजी अमृत जी से प्रभावित हुए तथा बाद में उन्हें अपना निजी सहायक बना लिया। राजकुमारी और गांधीजी का संबंध गुरु–शिष्या का था दोनों एक दूसरे से प्रभावित थे। राजकुमारी के परामर्श से ही गांधीजी ने साबरमती आश्रम को अपना प्रमुख स्थान बनाया था। गांधी जी के संपर्क में रहकर ही अमृत जी ने अनेक आंदोलनों में हिस्सा लिया। सन् 1930 में नमक सत्याग्रह के दौरान जुलूस में भाग लेने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया मुक्त होने के बाद अमृत जी को अखिल भारतीय महिला सम्मेलन का सचिव बनाया गया। सन् 1937 में राजकुमारी अमृत कौर के भाषणों को ''विस्फोटक'' समझते हुए सरकार ने उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रांत में उनका प्रवेश वर्जित कर दिया था। सन् 1937 को राजद्रोह के कारण उन्हें पुनः जेल जाना पड़ा। इसके बाद अमृत जी अखिल भारतीय महिला संघ की अध्यक्ष निर्वाचित हुई। सन् 1942 के आंदोलन में जुलूस में भाग लेने के फलस्वरुप लाठीचार्ज तक झेलना पड़ा, कालका में गिरफ्तार हुई व जेल गई, जेल का भोजन खाकर बीमार पड़ गई उपचार के लिए शिमला भेज दिया गया, शिमला में 20 माह तक रही। राजकुमारी अमृत जी राजनीति के बजाय समाज सेवा के कार्यों में अधिक सक्रिय रहती थी, उन्होंने विधवा पुनर्विवाह विवाह के समर्थन में प्रचार प्रसार किया, बाल विवाह का विरोध किया। स्वाधीनता के समय हुए भारत में नरसंहार ने अमृत जी को विचलित

कर दिया वे शरणार्थी शिविरों में जाकर व्यवस्था करती सबकी सहायता करती इन सब व्यस्तता के चलते वे बीमार भी पड़ गई। बाद में उन्हें स्वतंत्र भारत के स्वास्थ्य मंत्रालय का कमान सौंप दिया गया स्वास्थ्य मंत्री के रूप में उन्होंने महिलाओं व बच्चों के लिए अनेक स्वास्थ्य संबंधी योजनाएं चलाएं। इस तरह एक साधारण व्यक्तित्व के रूप में राजकुमारी अमृत कौर ने देश को आजादी दिलाने में तथा आजादी के बाद भी देश के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

सुचेता कृपलानी

25 जून,1908 लाहौर में जन्मी सुचेता कृपलानी के मन में बचपन से देश प्रेम रहा जब 10 वर्ष की थी तभी जलियांवाला बाग हत्याकांड हुआ उनके बाल मन में अंग्रेजों के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई। इसके बाद राजद्रोह के अभियोग शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव को मृत्युदंड दिए जाने के बाद सुचेता जी के युवा मन में क्रांति की ज्वाला धधक उठी। सुचेता जी की पढ़ाई पूरी हो जाने के बाद उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पढ़ाने का कार्य प्रारंभ किया। विश्वविद्यालय में चारों ओर राष्ट्रीयता की हवा बहती थी यही सुचेता जी भी राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ गई। यहां वे छात्रों को स्वतंत्रता संग्राम की उत्साहवर्धक गाथाएं सुनाकर छात्रों में देश प्रेम जगाती। सुचेता जी आरंभ से ही कांग्रेस से जुड़ी रही थी। सन् 1940 में आयोजित रामगढ़ के कांग्रेस अधिवेशन में व्यक्तिगत सत्याग्रह का प्रस्ताव पारित हुआ उन्होंने भी फैजाबाद में सत्याग्रह किया और 1 वर्ष की जेल तथा रुपये 200 जुर्माना भरा, फैजाबाद में जेल जाने के बाद उन्हें लखनऊ की जेल भेज दिया गया, वहां उनका स्वास्थ्य खराब हो गया जिसके चलते उन्हें मुक्त कर दिया गया। जेल से लौटने के बाद उन्हें कांग्रेस का महिला विभाग दे दिया गया। सुचेता जी समय–समय पर आजादी की लड़ाई के लिए जूझती रही कई बार जेल गई और रिहा होते ही पुनः स्वतंत्रता की गतिविधियों में लग जाती उनके पति आचार्य जे. बी. कृपलानी के साथ मिलकर आजादी की लड़ाई में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया आगे चलकर आचार्य कृपलानी ने कांग्रेस से हटकर किसान मजदूर प्रजा पार्टी का गठन किया जिसमें सुचेता जी भी कांग्रेस छोड़कर जुड़ गई। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात उनके कार्य और जुझारूपन को देखते हुए उन्हें सन् 1963 में उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया गया।

दुर्गाबाई देशमुख

दुर्गाबाई देशमुख का जन्म सन् 1909 में आंध्र प्रदेश के सुशिक्षित परिवार में हुआ दुर्गा जी का भी रुझान शिक्षा के प्रति रहा। 10 वर्ष की अल्पायु में उन्होंने कहा काकीनाद (आंध्र प्रदेश) में हिंदी की पाठशाला खोली जिसमें वे महिलाओं को हिंदी का अक्षर ज्ञान सिखाती। धीरे–धीरे दुर्गा जी की भाषा ज्ञान के साथ ही साथ समाज में व्याप्त कुरीतियों से लड़ने की शिक्षा भी देने लगी उनकी ख्याति दूर–दूर तक फैली। सेठ जमुनालाल बजाज भी उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हो गए तथा महात्मा गांधी व कस्तूरबा गांधी आदि को काकीनाद लेकर आए सभी दुर्गा जी से प्रभावित हुए। बड़ी होने पर दुर्गा जी गांधी जी से प्रेरणा पाकर कांग्रेस में भर्ती हो गई तथा पार्टी के कार्यकलाप करने लगी, विदेशी वस्तुओं की होली जलाना उन्हें सर्वाधिक रुचिकर लगता था, इसके अलावा भी दारू की दुकानों, विदेशी वस्तुओं की दुकानों का बहिष्कार करना व धरना देने का कार्य करती। धीरे–धीरे स्वाधीनता संग्राम के आंदोलनों में अग्रणी भूमिका निभाने लगी। नमक सत्याग्रह के समय ओजस्वी भाषण देने का कार्य किया। तीन बार जेल भी गई जेल में अमानवीय व्यवहार मिलने के बाद भी वह संग्राम से पीछे नहीं हटी। स्वाधीनता मिलने तक कई बार जेल गई और रिहा होते ही और अधिक जोश के साथ कार्य करने लगती, एक बार जेल के अधिकारी ने उनसे कहा– आपके सामने पूरी जिंदगी पड़ी है फिजूल के जेल प्रवासों में व्यर्थ न करके माफी मांग कर रिहा हो जाइए तब दुर्गा जी ने प्रत्युत्तर में अधिकारी को सबक सिखाते हुए कहा– आपने अभी जिंदगी आरंभ की है इसे गुलामी में नष्ट मत कीजिए हमारे साथ आइए हम आपको देशभक्ति का अमृत रस पिलाएंगे, ऐसी महान सोच की व्यक्तित्व थी दुर्गाबाई देशमुख जिन्होंने देश को गुलामी से मुक्त कराने की कई यातनाएं सही।

अरूणा आसफ अली

स्वाधीनता संग्राम में महिला क्रांतिकारियों का नाम अरूणा आसफ अली के बिना अधूरा है। सन् 1909 में

कलकत्ता के गांगुली परिवार में जन्मी अरुणा जी ने देश के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेकर अपनी देशभक्ति का परिचय दिया। अरूणा जी को अपने आरंभिक जीवन में राजनीति अथवा स्वतंत्रता आंदोलन में कोई रुचि नहीं थी परंतु उनके पति वकील आसफ अली राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेते थे। सन् 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में आसफ अली की गिरफ्तारी का प्रभाव अरुणा जी के मन पर पड़ा वह भी स्वाधीनता संग्राम संग्राम से जुड़ गई और आजीवन देश के उत्थान के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए अरुणा जी के महान कार्यों में सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मुंबई के कांग्रेस अधिवेशन भवन के ऊंचे स्थल पर अज्ञात ढंग से पहरेदारी के बीच ही राष्ट्रीय तिरंगा फहराना रहा तथा ''इंकलाब जिंदाबाद'' के नारे लगाना रहा, यह कार्य अधिवेशन भवन को घेरे सशस्त्र पुलिस के मुंह पर करारा तमाचा था, इसके अतिरिक्त भी अरुणा जी कई बार वेश बदलकर अंग्रेजों की आंखों में धूल झोंक कर आंदोलन में सक्रियता से जुड़ी रही। सन् 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान जब जेल गई तब जेल में कैदियों के साथ दुर्व्यवहार का जमकर विरोध किया और भूख हड़ताल भी की भूख हड़ताल के चलते उनकी तबीयत बिगड़ गई अंततः सरकार को झुकना पड़ा और कैदियों के साथ दुर्व्यवहार बंद हुआ। इस तरह अरुणा जी जेल में व जेल के बाहर भी देश के लिए व देशवासियों के लिए लड़ती रही।

अमन बाई

भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में खिलाफत आंदोलन को एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है। अंग्रेजों द्वारा युग प्रवर्तक नेता कमाल पाशा से किए गए वादों से मुकर जाने के विरोध में महात्मा गांधी ने सन् 1920–21 में खिलाफत आंदोलन आरंभ किया। देश में जगह–जगह विरोध प्रदर्शन कर आंदोलन किए जाने लगे इस आंदोलन के लोकप्रिय नेता मोहम्मद अली और शौकत अली थे इनकी मां अमन बाई जो कुछ सामाजिक कार्य किया करती थी इस आंदोलन से जुड़ गई, बुर्का उतारकर खिलाफत आंदोलन और असहयोग आंदोलन में सक्रिय हो गई। गांधी टोपी पहने अमन बाई देश के अनेक नगरों का दौरा कर जनसभा कर लोगों को संबोधित करती। मुस्लिम समाज की महिलाओं में शिक्षा का दीप जलाने का भी कार्य किया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी खादी के उपयोग के लिए लोगों को प्रेरित करती लोगों से मिलकर उन्हें संग्राम के लिए आर्थिक सहायता करने का आव्हान करती। सन् 1920 में जेल जाते समय गांधी जी ने उन्हें संदेश द्वारा सलाह दिया कि वे जेल जाकर समय नष्ट ना करें गिरफ्तारी से बच कर आंदोलन के लिए काम करती रहें। अमन बाई ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ बहुत बड़ा जनसैलाब खड़ा कर दिया जिससे अंग्रेजी सरकार भी उनके दौरे में रुकावट डालने का भरसक प्रयास करती थी, अमन बाई पर उन रूकावटों से कोई फर्क नहीं पड़ा वे जीवन पर्यंत आजादी के लिए लड़ती रही।

इनके अलावा भी भारत में अनेक ऐसी महान महिलाएं हैं जिन्होंने देश की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी कमला नेहरू, रानी चेन्नम्मा, डॉक्टर लक्ष्मी सहगल, विजयलक्ष्मी पंडित, बेगम हजरत महल, रमा देवी चौधरी, इंदिरा गांधी, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, सहोदरा बाई राय, महारानी तपस्विनी सुनंदा, सुहासिनी गांगोली, सोफिया खान, क्षीरोदा सुंदरी चौधरी, सत्यवती, मृदुला साराभाई, रानी सरस्वती बाई आदि किसी ने आर्थिक सहायता की तो किसी ने अपनी जान की बाजी देश के लिए लगा दी जैसे रानी सरस्वती बाई ने अपने पति व अन्य कैदियों की रिहाई के लिए अंग्रेज कैप्टन थोरनटन के रिहाई के बदले विवाह के प्रस्ताव को भी स्वीकार कर लिया परंतु कपटी थोरनटन के स्पर्श मात्र से बचने के लिए विवाह पश्चात अपने प्राणों की आहुति दे दी, ऐसी थी भारत की महान वीरांगनाएं। भारत के अलावा भारत के दर्शन व संस्कृति से प्रभावित होकर विदेशी महिलाएं जैसे सिस्टर निवेदिता व डॉक्टर एनी बेसेंट ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान दिया।

निष्कर्ष

भारत के स्वाधीनता संग्राम कि यदि गाथा लिखी जाए तो अनेक पन्ने कम पड़ जाए। भारत में ऐसे अनेक वीरांगनाओं ने जन्म लिया जो देश प्रेम की खातिर घर से बाहर निकल कर अनेक यातनाएं व क्रूरता सहकर आजादी की लड़ाई लड़ती रही। जिस देश में स्त्री को देवी तुल्य समझ कर उनके पैरों में फूलों की चादर बिछा दिया जाता था उन पैरों ने पदयात्रा से होने वाले छालों की पीड़ा सही। देश की साधारण परिवार में जन्मी स्त्री हो या किसी

राजा की रानी सबने देश को अंग्रेजो की गुलामी से मुक्त होने का बीड़ा उठाया कोई पति से प्रेरणा पाकर आजादी के संग्राम में सम्मिलित हुई तो कोई पिता या परिवार के आदर्शों पर चलते हुए देश के लिए प्राणों की बलि दे दी तथा देश को अंग्रेजो की गुलामी से मुक्त किया। देश के स्वाधीनता संग्राम में पुरुषों के समकक्ष खड़ी नारियों के उल्लेख के बिना भारत की स्वाधीनता का इतिहास अधूरा है, ऐसी महान वीरांगनाओं को कोटि–कोटि नमन।

संदर्भ सूची

1. सक्सेना, बलबीर (2008) *भारत की क्रांतिकारी महिलाएं,* मानसी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. सिंह, रामपाल और देवी, बिमला (2009) *भारतीय क्रांतिकारी विरांगानाए,* आत्माराम एण्ड संस प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. सक्सेना, बलबीर (2008) *भारतीय महिलाएं,* सनशाइन प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. वरे, एस. एल. (2019) *भारतीय इतिहास में नारी,* कैलाश सदन प्रकाशन, भोपाल।

——==00==——